दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 60* ❑ *अंक-18* ❑ *दिल्ली* ❑ *जून (द्वितीय) 2022* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है– दलित साहित्य

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

दलित साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें पहला शब्द है 'दलित' और उसके साथ जुड़ गया है 'साहित्य', और इस तरह सृजित हो गया है–'दलित साहित्य' यानि दलितों का साहित्य, दलितोद्धारक साहित्य यानी एक ऐसा साहित्य जो स्थापित, ब्राह्मणवादी साहित्य–उसमें प्रतिवादित– प्रतिस्थापित वर्ण व्यवस्था, सामाजिक विषमताओं से पूर्ण मनुस्मृति विधि–विधान को नक्कार कर समतामूलक, स्वतंत्रतापूर्ण, न्यायवादी भाईचारे के समाज की स्थापना करता है। सीधे–सादे सपाट शब्दों में कहा जा सकता है–''ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है–दलित साहित्य।''

दलित साहित्य की विवेचना करने से पहले हमें 'दलित' शब्द पर एक बार फिर खुलकर विचार करना होगा। 'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'दल' धातु से हुई है जिसका अर्थ है–तोड़ना, हिस्से करना, कुचलना, शक्तिहीन करना।

'दलित' शब्द बना है–दल + त्त यानी टूटा हुआ, कटा हुआ, पिसा हुआ, चिरा हुआ, दला गया, मर्दित किया गया, विनष्ट किया गया। जैसे चना को दल कर दाल बनने पर उसकी ऊर्जा खत्म हो जाती, सृजन शक्ति खत्म कर दी जाती है वैसे ही समाज के सबसे सृजनशील, श्रमजीवी, राष्ट्र निर्माता, मेहनतकश को वर्ण व्यवस्था के नाम पर समाज के सबसे नीचे के पायदान पर धकेलकर धन सम्पदा, सत्ता, शासन–प्रशासन, शस्त्र– शास्त्र, विद्याविहीन करके शक्तिहीन पंगु बनाकर समाज की दल–दल में धकेल कर दास–गुलाम–दलित बना दिया। मानवीय अधिकारों से वंचित– दासता से भरपूर गन्दगी जीने को मजबूर–जानवरों से बदतर जीवन जीने को बाध्य।

अंग्रेजी शब्दकोश में 'दलित' के लिए 'डिप्रेस्ड' शब्द दिया गया है जिसका अर्थ है–दबाना, नीचा करना, धीमा करना है, म्लान करना, दिल तोड़ना। हिन्दी शब्दकोश में 'दलित' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है–मसला हुआ, दबाया हुआ, रौंदा हुआ, मान मर्दित किया हुआ, जिसका दलन हुआ हो, जिसे पनपने या बढ़ने न दिया गया हो, कुचला गया हो, दबाकर रखा गया हो।

मनु की वर्ण व्यवस्था में समाज की सबसे नीचे के दायरे पर धकेल कर जिन्हें 'शूद्र' नाम दिया गया, और उन्हें शूद्र जाति कहा गया, उन्हें दलित वर्ग के नाम से कालान्तर में पुकारे जाने लगा। सबसे पहले ऐसे दलित वर्ग के लिए श्रीमती एनी बेसेंट ने अपने लेखन में 'डिप्रेस्ड कास्ट' शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद स्वामी विवेकानन्द और रानाडे ने शूद्र लोगों के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद बाबा साहब डा. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम ने शूद्र व अस्पृश्य जातियों के लोगों के लिए 'दलित' का नाम दिया। 1935 में बाबू जगजीवन राम ने 'दलित वर्ग संघ' नाम की संस्था बनाकर दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू किया।

महात्मा गांधी ने शूद्र व अछूत लोगों के लिए 'हरिजन' शब्द का इस्तेमाल किया। वहीं भारतीय संविधान में दलित वर्ग की जातियों को 'शड्यूल्ड कास्ट' 'अनुसूचित जाति' का नाम दिया गया।

समाज में मानवीय अधिकारों से वंचित शूद्र, अछूत, बहिष्कृत लोगों के लिए दलित, हरिजन, अनुसूचित जाति शब्दों का जो इस्तेमाल किया गया है, उसमें 'दलित' शब्द ही एक ऐसा शब्द है जो गत पांच हजार सालों में उनके साथ किए गये अमानवीय दुर्व्यवहार को प्रगट करता है। 'हरिजन' शब्द जाति व्यवस्था में निहित ऐतिहासिक अन्याय की चेतना को सवर्ण दृष्टिकोण को प्रगट करने वाला सहानुभूति दर्शाने वाला शब्द है। अनुसूचित जाति शब्द अंग्रेजी शासन की देन है जो सिर्फ उन कुछ जातियों को सूचीबद्ध करता है जिन्हें समाज में प्रताड़ित किया गया हो।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय

दलित राजनीति के अनछुये पन्ने

बाबा और बाबूजी एक सिक्के के दो पहलु ही नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक भी थे

अक्सर लोग बाबा साहब डा. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम को एक प्रतिद्वन्द्वी के रूप में मानते हैं। यह उनकी तुच्छ सोच का परिणाम है। गांधी जी जरूर बाबा साहब को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानते थे। इसलिए वह अछूतों (दलितों) के उद्धार के कामों में बाबा साहब डा. अम्बेडकर का विरोध करते थे और चूंकि बाबा साहब अम्बेडकर के प्रति गांधी जी कीयह सोच थी तो उस समय की कांग्रेस पार्टी जो पूर्णतः गांधीमयी थी, वह बाबा साहब को अपने दुश्मन के रूप में देखती थी। ऐसी स्थिति में बाबू जगजीवन राम जी के एक कांग्रेसी नेता होने के कारण यह मान लेना कि वह भी गांधी जी की तरह बाबा साहब के प्रतिद्वन्द्वी थे, सही नहीं है। दलितों के इन दोनों नेताओं के जीवन का विश्लेषण करने के बाद पता चलता है कि बाबा साहब व बाबूजी एक सिक्के के दो पहलू ही नहीं, अपितु जीवन में एक दूसरे के पूरक भी थे। दोनों एक दूसरे का सम्मान करते थे और जरूरत पड़ने पर दोनों एक दूसरे का पूरक बनकर सामाजिक कार्यों में आये अवरोधों को दूर करते थे।

महात्मा गांधी, बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम 20वीं सदी के ऐसे युग पुरुष हैं जिनके इशारे पर भारत की राजनीति बदलती रहती थी। देश की आजादी से पूर्व इन तीनों नेताओं की तत्कालीन अंग्रेजी हुकूमत ने कभी भी उपेक्षा नहीं की। वह तीनों की संगठन शक्ति का मूल्यांकन करके सभी को बराबर की तरजीह देती थी।

गांधी जी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को हुआ, बाबा साहब डा. अम्बेडकर का 14 अप्रैल, 1891 को और बाबू जगजीवन राम जी का जन्म 5 अप्रैल, 1908 को। इस तरह महात्मा गांधी बाबा साहब डा. अम्बेडकर से 22 साल बड़े थे और बाबा साहब डा. अम्बेडकर बाबू जगजीवन राम से 17 साल बड़े थे। गांधी जी कट्टर हिन्दू सनातनी बनिया थे, वहीं बाबा साहब और बाबूजी अछूत जाति में पैदा हुए थे, इसलिए दोनों को पैदाइश से मनुवादी वर्ण व्यवस्था द्वारा अछूतों के लिए निर्धारित दासता के कटु अनुभव मिले। छुआछूत, भेदभाव, अपमान, अत्याचार, तिरस्कार, अन्याय, दमन, शोषण आदि जो किसी भी अछूत (दलित) को जन्म लेते ही उसके साथ निर्धारित हो जाते थे, इनसे दलितों के ये दोनों नेता भी अछूते नहीं रहे। दोनों को बचपन से ही छुआछूत का दंश झेलना पड़ा। बाबा साहब डा. अम्बेडकर इसका कारण मनुस्मृति पर आधारित वर्ण व्यवस्था और जाति भेदभाव को मानते थे। इसीलिए वे हिन्दू धर्म की इन जन विरोधी व्यवस्थाओं को बदलने की अपेक्षा ऐसे दकियानूसी हिन्दू धर्म को छोड़ मानवतावादी, समतावादी धर्म को अपनाने के पक्षधर थे। गांधी जी पक्के सनातनी हिन्दू थे और वह हिन्दू धर्म को छोड़ने के घोर विरोधी थे, इसलिए उन्होंने

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, मो. 9810278936, 9891989175

बाबा साहब के धर्मान्तरण के विचार को खुलकर विरोध किया। वह चाहते थे कि अछूत हिन्दू धर्म का अंग है अतः सवर्णों का हृदय परिवर्तन करके अछूतों को छुआछूत से छुटकारा दिलाकर उन्हें समाज में समता का अधिकार दिया जा सकेगा। अब चूंकि, बाबू जगजीवन राम गांधी जी की कांग्रेस पार्टी के नेता थे। इसलिए वह भी बाबा साहब के अछूतों (दलितों) के धर्मान्तरण के विचार के विरोधी थे। गांधी जी की तरह वह भी मानते थे कि दलित–अछूतों का उद्धार हिन्दू धर्म में रहते हुए सवर्णों के हृदय परिवर्तन से संभव है। बस अछूतोद्धार के मामले में विचार व मत भिन्न होने के नाते लोग बाबा साहब व बाबूजी को एक दूसरे का प्रतिद्वन्द्वी समझते थे, जो गांधी जी व उनकी कांग्रेसी पार्टी के दुष्प्रचार के कारण था।

इंगलैंड के बेरिस्टर बनकर आने के बाद गांधी जी को एक भारतीय के केस लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहां अंग्रेजों की हुकूमत थी और गोरे अंग्रेज वहां के मूल निवासी काले लोगों से घृणा करते थे और उन्हें अपना दास व गुलाम समझते थे। एक दिन जब गांधी जी वहां ट्रेन के फर्स्ट क्लास डिब्बे में बैठकर सफर कर रहे थे तो गोरे अंग्रेजों ने उनसे कहा कि तुम्हें इस डिब्बे में सफर करने का अधिकार नहीं है। इसमें सिर्फ गोरे लोग सफर कर सकते हैं। गांधी जी ने जब उनसे कुछ कहना चाहा तो गोरे अंग्रेजों ने उन्हें धक्का मारकर ट्रेन से नीचे गिरा दिया। गांधी जी को यह बहुत बड़ा अपमान महसूस हुआ। उन्होंने अंग्रेजों के इस दुर्व्यवहार, अछूत व काले गोरे के भेदभाव के खिलाफ अहिंसक सत्याग्रह शुरू कर दिया। दक्षिण अफ्रीका में उन्हें पहली बार अहसास हुआ कि इंसानी भेदभाव से कितना अपमान और दुःखदर्द होता है और मानसिक आघात लगता है। भारत आकर उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के सामने दक्षिण अफ्रीका में काले गोरे के भेद के खिलाफ आवाज उठाई, पर यहां के उच्च वर्ण (सवर्णों) द्वारा जाति आधार पर अछूतों के साथ हर दिन किये जाने वाले छुआछूत, अपमान, तिरस्कार, दमन, शोषण व अत्याचार उन्हें दिखाई नहीं दिया। इसका मुख्य कारण गांधी जी का सनातनी हिन्दू होना था जो वर्ण व्यवस्था में विश्वास करते थे और उसके अन्तर्गत चतुर्थ वर्ण 'शूद्रों' को अपना पुश्तैनी धर्म सम्मत दास (गुलाम) मानते थे और वे उन पर अत्याचार, अपमान, अन्याय, अमानवीय व्यवहार करना अपना मनुस्मृति प्रदत्त धार्मिक अधिकार समझते थे।

गांधी जी के कट्टर सनातनी हिन्दू होने के कारण उनकी वर्ण व्यवस्था में अटूट आस्था थी, इसलिए वह चतुर्थ वर्ण शूद्रों (अछूतों) को अपने से ऊपर के तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) की सेवा करने के काम को धर्मसम्मत मानते थे। इस लिए गांधी जी वर्ण व्यवस्था के प्रावधान में किसी भी तरह के बदलाव के विरोध में थे। इसलिए वर्ण व्यवस्था के घोर विरोधी डा. अम्बेडकर के वे खिलाफ थे।

बाबा साहब और बाबूजी इस हिन्दू वर्ण व्यवस्था के प्रावधानों के खुद भुगतभोगी थे। बाबा साहब डा. अम्बेडकर अछूत महार परिवार में पैदा हुए थे। अछूत होने के कारण बचपन में कोई नाई उनके बाल नहीं काटता था। अतः इस अपमान को झेलते हुए अपने बाल घर पर ही उन्हें अपनी बहन से कटवाने पड़ते थे। एक बार बालक अम्बेडकर बैलगाड़ी में बैठकर अपने गांव जा रहे थे, तो गाड़ी वाले को जब पता चला कि यह बालक अछूत महार है, तो उसने उन्हें अपनी गाड़ी से धक्के देकर नीचे उतार दिया। बालक अम्बेडकर इस अपमान से तिलमिला उठे और उन्होंने कसम खाई कि वह जात पात की इस बुराई को जड़ से उखाड़ कर ही दम लेंगे।

डा. अम्बेडकर के साथ दूसरी घटना बड़ौदा में घटी, जब वह महाराजा बड़ौदा की छात्रवृत्ति की सहायता से विदेश में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद करारनामे के अनुसार बड़ौदा महाराजा के दरबार में तीन साल नौकरी करनी थी। वहां महाराजा गायकवाड़ ने उन्हें अपना निजी सचिव नियुक्त कर दिया। दरबार के लोगों को जब पता लगा कि अम्बेडकर अछूत महार जाति से है, तो इनके छू जाने के डर से चपरासी ने फाइलें दूर से फैंकनी शुरू कर दी और उन्हें पानी पिलाने से भी मना कर दिया। यही नहीं, उन्हें रहने के लिए कोई अपना मकान किराये पर भी देने को तैयार नहीं हुआ। महाराजा से इस बाबात शिकायत करने पर भी जब कोई समाधान नहीं निकला तो उन्होंने पास में ही एक पारसी होटल में एक कमरा किराये पर लिया। यहां भी जब होटल मालिक को पता चला कि अम्बेडकर अछूत महार है, तो उसने उनका सामान होटल के बाहर फैंकवा दिया। खुले आकाश में एक पेड़ के नीचे अपने सामान के साथ बैठे अम्बेडकर को इस घटना ने इतना आहत किया कि उन्होंने संकल्प लिया कि वह इस जाति व्यवस्था को मिटाकर दलितों को उनके बराबर के अधिकार और सम्मान दिलायेंगे।

बाबा साहब ने दलितों को संगठित कर अपने अधिकार प्राप्ति के लिए उन्हें संघर्ष का रास्ता दिखाया। उन्होंने पहले नासिक के कालाराम मन्दिर में अछूतों के प्रवेश के लिए आन्दोलन छेड़ा और फिर महाड़ के चौबदार तालाब के पानी पर अछूतों को अधिकार दिलाने के लिए आन्दोलन शुरू किया। दोनों जगह पर काफी संघर्ष के बाद उन्हें सफलता मिली। अछूतों को उनका समता का अधिकार मिला।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने जात–पांत व वर्ण व्यवस्था की जननी 'मनुस्मृति' की होली जलाकर दर्शाया कि देश के अछूत मनुवादी व्यवस्था (वर्ण व्यवस्था) के खिलाफ

है और अब इसे मानने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने अंग्रेजी हुकमरानों से भी खुले रूप से कहना शुरू कर दिया कि भारत के अछूत 'हिन्दू' नहीं हैं। फिर वर्ण व्यवस्था उन पर क्यों थोपी जाती है? वे भी देश के नागरिक हैं। उन्हें भी देश की सत्ता व सम्पदा में अन्यों की तरह बराबरी के अधिकार मिलने चाहिये। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत से साफ–साफ कह दिया कि भारत को आजाद करने से पहले वे इस देश के अछूतों को हिन्दुओं के चंगुल से आजाद करायें, जिनको अंग्रेज देश की सत्ता सौंपकर जाने वाले हैं।

अंग्रेजों ने अछूतों (दलितों) को सत्ता व सम्पदा में भागीदारी के लिए 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की थी, जिसका विरोध करते हुए गांधी जी ने आमरण अनशन की घोषणा कर और इसे वापिस अंग्रेजों को लौटाने के लिए बाबा साहब डा. अम्बेडकर को बाध्य किया, और फिर इसके बदले दलितों के उत्थान के लिए 'पूना पैक्ट' (करारनामा) किया जिसमें अछूतों को निर्वाचन, शिक्षा, नौकरी व अन्य सरकारी सुविधाओं में आरक्षण कोटा देने का प्रावधान था। इसे बाबा साहब डा. अम्बेडकर 'हाथी के मुंह में जीरा' मानते थे। वह किसी तरह भी गांधी जी के सनातन हिन्दू धर्म में रहने के लिए तैयार नहीं थे, इसीलिए 1935 में उन्होंने अछूतों की विराट महासभा येवला में हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा की, और 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर जहां अपना संकल्प पूरा किया, वहीं गांधी जी के हिन्दू धर्म की 'मनुस्मृति' की वर्ण व्यवस्था को सतत लागू रखने के और उसमें देश के अछूतों को फंसाये रखने के षड्यंत्र का पर्दाफांस किया।

गांधी जी डा. अम्बेडकर की प्रतिभा और विद्वता के सामने पासंग भी न थे। वह सदैव इस बात से भयभीत रहते थे कि अगर समूचा दलित समाज उनके नेतृत्व में हिन्दू धर्म से अलग हो गया तो फिर हिन्दू धर्म गिनती में नाममात्र का रह जायेगा। इसलिए उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा शक्ति अछूतों को बहलाने, बहकाने, झूठे ऊंचे सब्जबाग दिखाने में लगा दी। उन्होंने गरीबों की तरह एक धोती में नंगे बदन, पांव में खड़ाऊ पहन नई दिल्ली के मन्दिर मार्ग की बाल्मीकि (भंगी) बस्ती में रहना शुरू कर दिया। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं से कहा कि वे अपना शौच स्वयं उठायें। उन्होंने इसके साथ ही बहुत लुभावना नारा दिया था–'मेरा अगला जन्म हो तो भंगी के घर में हो।' उन्होंने दया का पात्र बनाते हुए अछूत–दलितों को नया नाम दिया–'हरिजन'। उनके खान– पान और रहन–सहन को देखकर ही लोगों ने उन्हें 'बापू' और 'महात्मा' बना दिया। अछूतों के उद्धार के लिए उन्होंने 'हरिजन सेवक संघ' संस्था की स्थापना की। बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी के आडम्बर को अछूतों के लिए छलावा और गांधी के नंगे बदन, बकरी के दूध पर निर्भर रहने को 'गांधी का ढोंग' मानते थे।

कुछ लोग नासमझी में बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम की पारस्परिक तुलना करने लगते हैं। बाबा साहब और बाबूजी की कोई तुलना ही नहीं है। बाबूजी जब 1931 में काशी हिन्दू विद्यापीठ, बनारस से बी.एस. सी. पास कर बिहार के अपने गांव चन्दवा (सासाराम जिला) लौट आये थे, तब तक राऊण्ड टेबुल कान्फ्रेंस, इंगलैंड में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर और वहां भारत के अछूतों का पक्ष रखने के कारण बाबा साहब डा. अम्बेडकर का नाम व ख्याति भारत के कोने–कोने में ही नहीं, पूरी दुनिया में हो चुकी थी। बाबू जगजीवन राम जी अपने विद्यार्थी काल में ही बाबा साहब डा. अम्बेडकर के अछूतोद्धार कार्य से प्रभावित थे ओर उन्हें देश का असली अछूत नेता के रूप में मानते थे। अंग्रेजी हुकूमत द्वारा भारत के अछूतों के उत्थान के लिए विशेष अधिकारों के रूप में दिये 'कम्युनल अवार्ड' को वह बाबा साहब डा. अम्बेडकर के प्रयास की बदौलत मानते थे। इसलिए गांधी जी ने जब अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त 'कम्युनल अवार्ड' का विरोध करते हुए इसे रूकवाने के लिए 'आमरण अनशन' की घोषणा की, तब बाबू जगजीवन राम जी ने गांधी जी को एक पत्र लिखा था कि वे अछूतों के उत्थान व विकास के लिए मिले विशेष अधिकारों का विरोध न करें, क्योंकि हजारों साल बाद यह एक अवसर आया है जब वे देश की 'सत्ता' और 'सम्पदा' में बराबरी करते हुए समाज में समता पा सकेंगे। शायद गांधी जी ने बाबूजी के इस खत का उत्तर देना मुनासिब नहीं समझा, और वह अपने 'आमरण अनशन' पर अडिग रहे जब तक कि बाबा साहब अम्बेडकर ने इसे वापिस करने की घोषणा के साथ 'पूना पैक्ट' पर अपने 'हस्ताक्षर' नहीं कर लिए। उस समय बाबूजी की समझ में नहीं आ रहा था कि गांधी जी, अछूतों को मिले इन विशेष अधिकारों का विरोध क्यों कर रहे हैं?

गांधी जी ने दया भाव दिखाते हुए अछूतों को जो नया नाम 'हरिजन' दिया था, बाबूजी इसके भी सख्त खिलाफ थे। उन्होंने इसके विरोध में गांधी जी को पत्र लिखकर कहा–'अगर अछूत लोग 'हरिजन' हैं यानि हर (भगवान) की औलाद हैं तो बाकी लोग क्या 'दुर्जन' की औलाद हैं। बाबूजी सारी जिन्दगी इस 'हरिजन' शब्द का विरोध करते रहे और 1981 में उन्होंने इसे अपमानजनक कहते हुए इसके प्रयोग पर बैन लगवा दिया और इसे गैर–संवैधानिक करार दिया। इसके स्थान पर बाबूजी अछूतों को दलित बोलना उचित समझते थे। इसीलिए गांधी जी के हरिजन सेवक संघ के सामने उन्होंने 1935 में भारतीय दलित वर्ग संघ की स्थापना की। •

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

पृष्ठ 1 का शेष....ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है–दलित साहित्य

यह समग्र ऐसी जातियों व लोगों को प्रगट नहीं करता, जिन्हें वर्ण व्यवस्था के नाम पर सत्ता– सम्पदा व शस्त्र–शास्त्र व विद्याविहीन कर जानवरों से भी बदतर मूक व्यक्ति बना दिया गया हो। इन सबमें 'दलित' ही अकेला ऐसा शब्द है जो करुणा या पश्चाताप को नहीं, बल्कि बेवजह दमन, अपमान, तिरस्कार, अन्याय, बलात्कार का शिकार होने के स्वाभाविक रोष को व्यक्त करता है और उस ऐतिहासिक प्रकरण की ओर संकेत करता है कि उसे कैसे, किसने, कब, क्यों समाज के समतावादी ढांचे से अन्तिम छोर पर धकेल कर 'दलित' बना कर शक्तिहीन, मूक, बधिर बना दिया गया। अकेले 'दलित' शब्द में वह शक्ति है जो समाज में बहिष्कृत लोगों की दुर्दशा का बखान करते हुए उन्हें अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए खड़े होकर संघर्ष करने के लिए उत्प्रेरित करता है।

'दलित' शब्द असहाय, बेबस, लाचार, सोच विचारहीन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं अपना सब कुछ छीन लिए जाने वाले 'सर्वहारा' वर्ग के लोगों का भी शंखनाद है, जिनके विषय में कहावत मशहूर है–

जाकि धन धरती हरी,
रखिये न उन्हें संग,
अगर रखना पड़े संग, तो
उन्हें बनाये रखना अपंग।

इस तरह भाग्य–भगवान, पाप–पुण्य और धर्म कर्म का भय दिखाकर उन्हें पूर्व जन्म में किये अधम–नीच कर्म का सिद्धान्त बताकर, इस नीच जाति में पैदा होने को पूर्व जन्म के कर्मों से जोड़कर वे धर्म के नाम पर सदैव प्रताड़ते रहे, बंधुवा बनाकर बेगार लेते रहे और विद्याविहीन कर उनके बुद्धि–बल को मर्दित कर केवल खाने के लिए जूठन, पहनने के लिए फटे–पुराने चीथड़े–उतरन, और नीचे जमीन पर सोने के लिए घास–फूंस की बिछावन देकर, दास व गुलाम बनाकर अपनी सेवा कराते रहे। 'दलित' शब्द धर्म और पुनर्जन्म के नाम पर किये षड्यंत्र का पर्दाफांस करते हुए ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था पर सीधी चोट करता है। यही दलित शब्द जब साहित्य के साथ जुड़कर दलित साहित्य बन जाता है तो यह ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र बन जाता है।

'साहित्य' का अर्थ है–'या हिताय सः साहित्य' यानी जो कल्याणकारी है, हितकारी है, परोपकारी है–वही ही साहित्य है। वह साहित्य सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की भावना से परिपूर्ण होता है। 'साहित्य' की इस कसौटी पर जब हम 'हिन्दी साहित्य' को परखते हैं तो वह कहीं भी 'साहित्य' की धारणा को पूरा नहीं करता। समग्र हिन्दी साहित्य ब्राह्मणवादी साहित्य है जो कपोल कल्पित सोच और मनघडन्त विचारों पर आधारित है। उसमें आसमान की उड़ान की कल्पना तो है पर धरती पर वर्ण व्यवस्था के नाम पर प्रताड़ित, बाधित बन्धुआओं की छाया भी दिखाई नहीं देती। उस ब्राह्मणवादी साहित्य में उच्च वर्णों के राज निवासों में गूंजती पायलों की आवाज तो सुनाई पड़ती है, पर दूसरी ओर अमानवीय व्यवस्था के पीड़ित और कर्राते मनुष्यों का रुदन व क्रन्दन कहीं सुनाई नहीं पड़ता। उनके इस ब्राह्मणवादी साहित्य में नारी के नख–शिख से पैरों तक के सौन्दर्य का वर्णन तो दिखाई देता है, पर वर्ण व्यवस्था के नाम पर समाज के सबसे नीचे के पायदान पर धकेले व्यक्ति के शरीर पर लाठी, डंडे, रोड़े की मार से उभरे मवाद भरे घाव नहीं दिखाई देते।

तथाकथित उच्च वर्ण की जैसी सोच है वैसा ही उसका साहित्य है। यह पेट भरे, अय्याशी लोगों का साहित्य है जो उन्होंने अपनी भड़ांस निकालने और दरबारी लोगों के बीच वाह–वाही लूटने के लिए गाल बजाई करते हुए लिखा है। उसमें न आपको वर्ण व्यवस्था, जात–पांत, ऊंच नीच, भेदभाव के खिलाफ कुछ लिखा मिलेगा और न ही भाग्य–भगवान, पाप–पुण्य, धर्म–कर्म और पुनर्जन्म के विरुद्ध कोई आवाज सुनाई देगी। वहां आपको मिलेगा मनु महाराज की मनुस्मृति पर आधारित चतुर्वर्ण व्यवस्था, जहां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तो सुपर इंसान हैं बाकी 'शूद्र' वर्ण के लोग जानवरों से भी अधम, नीच, अस्पृश्य हैं जिनकी छाया से ही 'पाप' लग जाता है और जिससे मुक्त होने के लिए गंगा स्नान करना पड़ता है। उनकी और उनके ब्राह्मणवादी साहित्य के दूषित भावना के कारण समाज एकजुट सबल न हो सका और इस वर्ण व्यवस्था के कारण भारत देश लगभग ढाई हजार साल तक विदेशियों का गुलाम रहा।

दलित साहित्य–दलितोत्थान साहित्य यानि वह साहित्य जो दलितों, पीड़ितों, शोषितों, उपेक्षितों और असहाय वर्ग को उत्थान और नव विकास के लिए प्रेरित करता है, जो ऐसे व्यक्तियों की उनके गौरवमयी इतिहास से परिचित कराते हुए उनको उनकी मानवीयता की पहचान से अवगत कराता है। यह वह साहित्य है जो धरती से जुड़े लोगों को उनकी समस्या और दुर्दशा से अवगत कराते हुए उनको निराकरण और समाधान के उपाय बताता है।

दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह वर्ण व्यवस्था, जात–पांत, ऊंच–नीच, भेदभाव के दायरे से ऊपर है और जिसे धर्म, भाषा और प्रदेश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। यह समाज के सर्वहारा वर्ग के समान निश्चल और सरल है। इसे अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए किसी छंद, अलंकार आदि की आवश्यकता नहीं। दलन की वेदन, शोषण की कुढ़न, अन्याय का उत्पीड़न और अत्याचार का रुदन, अपमान की पीड़ा–अभिव्यक्ति भाषा और

अलंकार नहीं देखती।

दलित साहित्य पुनर्जन्म, भाग्य, भगवान, धर्म, कर्म के सिद्धान्त को नक्कारता है और व्यक्ति को साधना, आस्था और चिन्तन के प्रति उन्मुख करता है। वह यह साहित्य है जो एक स्वस्थ, उचित लक्ष्य की ओर मानव समाज में समृद्धि भाव उत्पन्न करता है। यह इंसान को इंसान से तोड़ता नहीं, जोड़ता है। वह इंसान में इंसान के प्रति भेदभाव, तिरस्कार, अलगाव, घृणा पैदा नहीं करता। अपितु उनमें मानव प्रेम, सहिष्णुता, भ्रातृ–भाव पैदा करता है। मानव जीवन में समरसता और समव्यता लाता है।

दलित साहित्य इंसानियत भेदभाव, छुआछूत, घृणा, नारी शोषण, बंधुआ जीवन, धार्मिक कठ मुल्लापन, कर्मकांड, रुढ़िवाद और ब्राह्मणवाद के खिलाफ खुला विद्रोह है। जो इंसानियत प्रेमी है, उनकी वह प्रशंसा करता है, जो दलितोत्थान में जुड़े हैं, उनको फूल चढ़ाता है, जो मानव अधिकारों के लिए जूझ रहे हैं, उनका सम्मान करता है और जो दासता और शोषण से मुक्ति दिलाते हैं, उनकी आराधना करता है।•

संत, संवेदना और समता

सुश्री रूपा

भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिंतन में अस्मितावादी तकाजा पिछले कई दशकों से लगातार हावी रहा है। इस लिहाज से भारतीय समाज के वर्गीय चरित्र पर भी खूब बातें होती रही हैं। सबसे अहम् है कि इस पूरी चिंता और विमर्श के केंद्र में यह बात है कि लंबे समय तक जाति–धर्म के आधार पर भारतीय समाज में ऊंच–नीच का अंतर रहा है। सभ्यता और कुलीनता के कथिम बोध ने समाज के एक हिस्से के साथ लंबे समय तक अमानवीय सलूक किया है।

यही नहीं, अमानवीयता का व्यवहार कई रूपों में आज भी बहाल है और इस कारण सामाजिक अंतर्विरोध के कई पहलू जब–तब नए सिरे से उजागर होते रहते हैं। बड़ी बात यह है कि इस अंतर्विरोध से निकलने के लिए नए सामाजिक तर्क और रास्ते सुझाए जाते रहे हैं जबकि इसके लिए कई संवेदनशील पहल पूर्व में न सिफ हो चुके हैं बल्कि उसका समृद्ध इतिहास भी है। भारतीय सामाजिक परंपरा और इतिहास को लानत से देखने के बजाए अगर इन पहलों को देखें–समझें तो हमें मौजूदा सूरत से निपटने में न सिर्फ मदर्द मिलेगी बल्कि यह सब ऐतिहासिकता के ठोस अनुभवों और तर्कों पर भी खरा उतरेगा।

गौरतलब है कि भारतीय संत परंपरा ने उस दौर में समाज और संस्कृति को संवेदना, सौहार्द और आस्था जैसे मानवीय सरोकारों से जोड़ा, जब बाकी दुनिया मध्यकालीन अंधेरे में डूबी थी। इन संतों की फेहरिस्त भी कोई इकहरी नहीं है। जिस संत की इन दिनों काफी चर्चा है वे हैं संत रविदास। भारत के किसी भी संत को शायद ही इतने अलग–अलग नामों से पुकारा गया होगा, जितना कि रविदास को। पंजाब के लोगों ने उन्हें 'रविदास' कहा। 'आदि ग्रंथ' या 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' में जहां कहीं भी उनके पद संकलित हैं, वहां उनका नाम रविदास ही लिखा गया है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में उन्हे रैदास के नाम से ज्यादा जाना जाता है। गुजरात और महाराष्ट्र के लोग उन्हें 'रोहिदास' के नाम से पुकारते हैं। इसी तरह बंगाल के लोग उन्हें रुइदास के रूप में याद करते हैं।

संत कबीर की तरह रैदास भी जातीय और धार्मिक सामाजिक ढांचे पर न सिर्फ सवाल खड़े करते हैं बल्कि वे प्रेम और समन्वय की बात कहकर सामाजिक सद्भाव के लिए बड़ी पहल भी करते हैं। उनका जन्म चर्मकार परिवार में हुआ था। कहा जाता है कि जिस दिन उनका जन्म हुआ, उस दिन रविवार था। इसी कारण उनका नाम 'रविदास' रखा गया।

उनका जन्म स्थान काशी है। पर उनकी ख्याति और स्वीकृति ने स्थान और भाषा की दूरी को अपने समय में ही मिटा दी थी। श्रम, आस्था और समता की सैद्धांतिक त्रयी के साथ भारत की संत परंपरा को देखें तो पहली बात तो यही दिखेगी कि श्रम के साथ संतों की भक्ति परवान चढ़ी है। कबीर आजीवन जुलाहे रहे, संत सैन ने नाई का पेशा नहीं छोड़ा, नामदेव ने रंगरेज जारी रखी तो दादू दयाल रुई धुनाई के अपने काम में लगे रहे। इसी तरह गुरु नानक ने अपने जीवन के आखिरी के दिनों में खेती की। वैसे श्रम की यह साध जारी रखते हुए आस्था और भक्ति में गहरे उतरना रैदास के लिए आसान नहीं था।

उनका पुश्तैनी पेशा जूते बनाने का था। यह पेशा और इससे जुड़ी जाति सामाजिक तौर पर कभी भी सम्मानित नहीं मानी गई। लिहाजा आस्था से समता के संदेश तक की रैदास की यात्रा आसान नहीं थी। पर इतनी बात शायद रैदास ने नहीं सोची, उनके मन और सोच में तो सिर्फ राम और गोविंद समाए थे, इन्हीं की लगन थी। इससे आगे सब व्यर्थ और गैरजरूरी। आलम यह रहा कि कबीर जैसे संत ने भी कहा–'साधुन में रविदास संत।'

दिलचस्प यह भी कि रैदास खुद तो बड़े संत हैं ही, उनका नाम अन्य संतों से भी जुड़ा है। वे कबीर के गुरुभाई हैं। स्वामी रामानंद एक तरह से गंगोत्री हैं जिनसे कबीर और रैदास जैसी कई धाराएं फूटी हैं। एक तरफ रैदास के गुरु रामानंद जैसे अद्भुत व्यक्ति हैं, तो दूसरी तरफ रैदास की शिष्या हैं मीरा जैसी अद्भुत नारी। इन दोनों के बीच में भक्ति और समता की चमक अनूठी है। रैदास ने जिस तरह श्रम की महत्ता और संवेदना को जरूरी तकाजे के तौर पर स्वीकृति दिलाई, वह हमारे लिए आज भी एक सामाजिक सुलेख और प्रेरणा की तरह है।•

हिमायती
7 / जून (द्वितीय) 2022 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 14 जून, 2022
आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

आदिवासी क्रांति के प्रतीक बिरसा मुण्डा

कु. आशा रानी मरमट

15 नवम्बर, 1875 को आदिवासी क्रांति प्रणेता बिरसा मुण्डा का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम सुगना मुण्डा एवं माता का नाम करमी था। सुगना मुण्डा ने हिन्दुओं के अत्याचारों और अपमान को घटनाओं से दुखी होकर ईसाई धर्म स्वीकार किया। तत्कालीन समय में शूद्र को पढ़ने का अधिकार नहीं था। उस समय 1886 से 1891 तक वह अपनी मौसी के वहां रहकर 6 वर्ष तक विद्याध्ययन किया। बिरसा मुण्डा को बांसुरी बजाने का बड़ा शौक था। कभी–कभी एकान्तवास में वे सोचते रहते थे कि हम निरपराध होते हुए अन्याय और अत्याचारों के शिकार क्यों हुए? हम आदिवासी खुद भूमि तैयार कर अपनी जीविका हेतु खेत तैयार करते हैं जिन्हें सवर्ण जमींदार छीन लेते हैं। बिरसा मुण्डा ने कई बार महसूस किया कि आदिवासी लोग जैसे धोड़, कंवर, धनुहार, संथाल, मुण्डा और उराव आदि समाज को सवर्णों ने इसलिए शिक्षा से वंचित रखा है जिससे वे पढ़–लिखकर सवर्णों का विरोध करने न लगे।

सन् 1885 से 1899 तक आदिवासियों का आन्दोलन इन्हीं अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध रहा जो कि 'कोल विद्रोह' के नाम से जाना गया था। इस आन्दोलन का सबसे बड़ा कारण था आदिवासी लोग भूमि खोदकर खेत बनाते थे और सवर्ण लोग उनसे छीन लेते थे और जमीन से बेदखल कर देते थे। इस विद्रोह में आदिवासियों को काफी राहत मिली। परिणामस्वरूप सवर्ण, जमींदार, व्यापारी, महाजन और सामंती लोगों को स्थान छोड़कर भागना पड़ा। अचानक विद्रोह में ऐसा मोड़ आया कि विद्रोही बिचराई मानकिं और सूर्या के पराजित हो जाने के बाद कोल विद्रोह ठंडा पड़ गया। फलस्वस्प सवर्ण और राजपूतों ने आदिवासी लोगों पर अनेक जुल्म ढाये। महिलाओं की इज्जत लूटी ओर आदिवासियों को बेगार करने पर मजबूर कर दिया और उन्हें दाने–दाने को मोहताज बना दिया। पेट की आग शांत करने के लिए उन्हें गन्दे से गन्दा काम करना पड़ा। उन्हें इस कारण घर छोड़ना पड़ा। आदिवासी को पेट भरने की खातिर चाय बागानों में कड़ी मेहनत करनी पड़ी। स्थिति को गाने के माध्यम से गाते हुए अतीत की याद ताजा करते थे।

चलचा बागाने
चलचा बागाने गो।
घर तोमर नाई
जामि नाई चलौ।।

सन् 1887 के शासन काल में आदिवासी लोग ईसाई धर्म अपनाने लगे तो सवर्ण जमींदारों ने ईसाई मिशनरी का विरोध किया। इसलिए नहीं कि उन्हें आदिवासी लोगों से प्यार था बल्कि इसलिए कि आजीवन मजदूरी कौन करेगा तथा उनका मैला कौन ढोयेगा? इस कारण से ईसाई मिशनरियों ने भी सवर्णों का साथ दिया। इस प्रकार दोनों के बीच एक समझौता हुआ। ईसाई धर्म ग्रहण करने पर भी वहीं काम करना पडेगा। इसके विपरीत सन् 1850 में आदिवासियों ने ईसाई मिशनरी के विरुद्ध पुनः विद्रोह कर दिया जिससे भयभीत होकर ईसाई मिशनरियों ने आदिवासियों को आश्वासन दिया कि सभी आदिवासियों को सवर्ण जमींदारों द्वारा छीनी गई भूमि वापस दी जायेगी, परन्तु यह सब धोखा साबित हुआ। परिणामस्वरूप आदिवासियों के अन्य सम्बन्धियों (उरावों) ने सवर्णों के खिलाफ 'सरदार आन्दोलन' छेड़ दिया इसमें निम्न मांगों को दोहराया गया–

1. क्षेत्रीय वन सम्पदा खेत, जंगल, पहाड़, खनिज सम्पदाओं पर आदिवासियों का समान अधिकार होगा।

2. सवर्ण लोगों द्वारा आदिवासियों से जबरदस्ती बेगार करानी बन्द करनी होगी।

3. स्त्री, पुरुष एवं बच्चों पर घिनौने अत्याचार बन्द करने होंगे।

4. सरदार आन्दोलन में यह भी तय किया गया कि तामण व कौल विद्रोह के साहसी वीरों की गाथाओं को जन–जन में प्रचारित किया जायेगा कि जिससे पुरोहित, ब्राह्मण, व्यापारी वर्ग सभी के दिखावटी भाईचारे पर कोई आदिवासी विश्वास नहीं करेगा क्योंकि अंग्रेज सवर्ण दोनों ही हमारे शासक और शोषक हैं जिन्होंने हमे बेदखल करके हमारी जमीन से अलग किया है। इस तरह सरदार आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए निम्न तीन दिशायें दी गईं–

1. 1859 से 1881 तक जमीर आन्दोलन।
2. 1882 से 1890 तक मिशन विद्रोह।
3. 1891 से 1895 तक राजनैतिक आन्दोलन।

उपरोक्त आन्दोलनों में जमीर आन्दोलन को महत्वपूर्ण माना जाता है। इस आन्दोलन के अन्तर्गत सवर्ण जमींदारों के शोषण एवं अत्याचारों के विरुद्ध आदिवासी समुदाय ने अपने आत्मसम्मान की आवाज बुलन्द की थी। उन्होंने गाने की तर्ज में इस लड़ाई का मकसद बताया कि यह मात्र घास–फूंस जलाकर छोड़ देने तक सीमित ही है। जैसा सवर्ण लोग समझते हैं क्योंकि जंगलों में आग से जली हुई घास–फूंस भी हवा के झोंकों

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

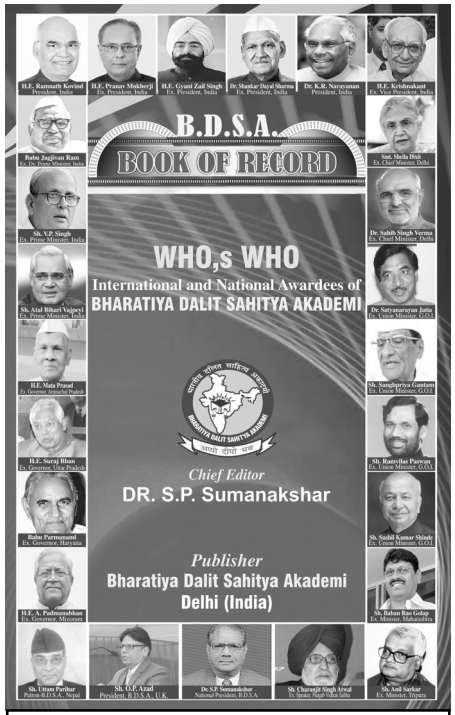

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारिों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मोबाइल :
9891989175, 9810278936

से उड़कर चारों ओर भयंकर आग बनकर सब कुछ राख बना देती है। यह आदिवासियों को जुल्म और अत्याचारों से मुक्त कराने की लड़ाई है जिसका हम अन्तिम दम तक मुकाबला करते रहेंगे। जमीर आन्दोलन के तहत आदिवासी संघर्ष को नाकाम करने के लिए ईसाई मिशनरियों ने गुमराह किया। सन् 1855 में भागनाड़ी गांव के सिन्धु और कानु आदिवासी भाइयों ने 30 जून, 1855 को सवर्ण सामंतवादी ताकतों और अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता आन्दोलन छेड़ दिया जिसमें तीस हजार आदिवासी मारे गये जो कि आज भी शहीद दिवस (सुवर्ण रेखा दिवस) मानकर आदिवासी शहीदों को याद किया जाता है।

संथाल विद्रोह

विद्रोह के उपरान्त आदिवासी समाज में आपसी फूट डालकर अलग–अलग कर दिया और शिक्षा से वंचित किया गया। दूसरी ओर सरदार आन्दोलन से दुखी अंग्रेज ने आन्दोलनों में निर्धारित मांगों का कार्यशाला लोकनाथ को सौंपा गया। सवर्णों का पक्ष लेते हुए लाला लोकनाथ रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके विरोध में आदिवासियों ने सन् 1862 से 1868 तक विद्रोह खड़ा किया। रिपोर्ट प्राप्ति के बाद सन् 1869 में अंग्रेज सरकार ने प्रस्ताव पास किया। 2462 गांव में भूमिहार एवं जमींदार आदिवासियों की ग्रसित भूमि वापिस करेंगे परन्तु ऐसा नहीं हुआ और सरदार आन्दोलन फिर से भड़क उठा, आदिवासी लोगों ने आन्दोलन का सहारा लिया, परन्तु न्याय नहीं मिला और लड़ाई फिर से शुरू हो गई। इस आन्दोलन से क्षुब्ध होकर चालीस आदिवासियों को जेल में ठूंस दिया जिसमें 8 की मृत्यु हो गई। विद्रोह धीमा पड़ गया। सन् 1890 में आदिवासी आंदोलनकारियों ने फिर संगठन बनाकर आंदोलन चलाया जिसे राजनीतिक रूप दिया गया। इस आंदोलन में बिरसा मुण्डा ने विशेष भूमिका निभाई।

बिरसा मुण्डा आत्म सम्मान और आदिवासी समाज की रक्षा के लिए खुशी–खुशी जेल चले गये। 9 जून, 1900 में उनकी मृत्यु हो गई और इस प्रकार बिरसा मुण्डा अपनी मातृभूमि के लिए समता और सम्मान के लिए बलिदान हो गये। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009